भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में क्रांतिकारी संगठन एच० एस० आर० ए० की भूमिका

डॉ० रणबीर सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जी० जी० डी० एस० डी० कॉलेज, पलवल |

Email: puniya.ranbir81@gmail.com

ब्रिटिश शासन के लगभग 100 वर्षों के भयंकर राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शोषण के खिलाफ अनेक आदिवासी एवं किसान आंदोलन हुए। किंतु जो प्रबल रूप से अंग्रेजों के खिलाफ प्रथम व्यापक विरोध हुआ उसे 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है। 1857 के विद्रोह के अमानुषिक अत्याचार के पश्चात ब्रिटिश सत्ता की स्थापना हुई। किंतु सच में असफल क्रांति के पश्चात राष्ट्रीय भावनाओं को प्रोत्साहन, भारतीय धर्म और संस्कृति का पुनर्जागरण भी हुआ। भविष्य में जन भावनाएं दिन-प्रतिदिन उग्र होती चली गई और इसी का परिणाम 1885 में एक अखिल भारतीय संगठन के रूप में **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** की स्थापना की हुई | जिसका उद्देश्य जाति, वर्ण, धर्म, प्रांत व किसी अन्य भेदभाव के बिना सभी भारतीयों का प्रतिनिधित्व करना था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विभिन्न उदारवादी, उग्रवादी एवं गांधीवादी चरणों में अनेक आंदोलनो ने भारत और ब्रिटिश के आपसी संबंध विरोधी बना दिए। गांधी युग में तो हर मुख से स्वतंत्रता की मांग और राष्ट्रीयता जन-जन की वस्तु बन चुकी थी।[1]

20वीं सदी के प्रारम्भ में एक अपूर्ण राष्ट्रीय जागृति की लहर दो धाराओं एक **उग्रवादी राष्ट्रवाद** और इसके अतिरिक्त नवयुवकों का वह वर्ग जिन्हें उग्रवादियों के शांतिपूर्ण संघर्ष में विश्वास न था। ये आतंक और हिंसा द्वारा ब्रिटिश शासन को संपूर्ण रूप से नष्ट करना चाहते थे। इन संगठनों में मुख्य रूप से **एच० एस० आर० ए०** और **हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन** का प्रमुख एवं महत्वपूर्ण स्थान था। सारांश रूप से चाहे उदारवादी, उग्रवादी तथा क्रांतिकारी हो मुख्यतः सभी का लक्ष्य एक ही था 'भारत की आजादी' साधन भले ही भिन्न-भिन्न थे। [2]

एच० एस० आर० ए० क्रन्तिकारी संगठन के क्रांतिवीर **भगत सिंह** अपने युवा साथियों के साथ देशभक्ति को अपराध की संज्ञा देकर ब्रिटिश सरकार द्वारा तय दिन और 11 घंटे पूर्व ही फांसी पर लटका दिए गए। भगत सिंह अपनी शादी के विषय में अपने माता-पिता से कहा '**अगर गुलाम भारत में मेरी शादी होगी तो मेरी**

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:07 in July-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

दुल्हन मौत होगी' फिर वे क्रांतिकारी संगठन हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन में शामिल हो गए। वीरभगत सिंह ने निडरता पूर्वक अपने अंतिम पत्र में अंग्रेजों को कहा था कि 'फांसी के बदले मुझे गोली मार देनी चाहिए क्योंकि मुझे युद्ध के दौरान गिरफ्तार किया गया है, इसलिए **'फांसी मेरे लिए सजा नहीं हो सकती मुझे तोप के मुंह में रखकर उड़ा दिया जाए'** वह मुस्कुराते हुए फांसी के फंदे पर झूल गए। वास्तव में निडरता से भरे इस कार्य से उनका मकसद **ब्रिटिश साम्राज्यवाद को नीचा दिखाना था।** [3]

एच० एस० आर० ए० के आदर्श, उद्देश्य, गतिविधिया एवं कार्यक्रम: असहयोग आंदोलन के पूर्णतया असफल होने के पश्चात बंगाल में विशेषकर संपूर्ण उत्तरी भारत में क्रांतिकारी संगठन बनने लगे उसके परिणाम स्वरुप अक्टूबर 1924 कानपुर में हुए समस्त क्रांतिकारी दलों के सम्मेलन में सचींद्र सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल तथा जगदीश चंद्र जैसे पुराने क्रांतिकारियों के साथ भगत सिंह, सुखदेव, शिव वर्मा, बोहरा तथा आजाद जैसे तरुण क्रांतिकारियों ने भी भाग लिया। इन सभी के परिणामस्वरुप समयनुसार **हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन सोशलिस्ट** संगठन का भी जन्म हुआ।[4]

इस दल के मुख्यत: आदर्श गांधी जी की अहिंसावादी नीतियों की निरर्थकता के प्रति जागृति, भारत की संपूर्ण स्वतंत्रता के लिए क्रांति की आवश्यकता पर बल एवं अंग्रेजी समाजवादी व्यवस्था के स्थान पर भारत पर संघीय गणतंत्र की स्थापना करना था। इन क्रांतिकारियों ने अपने उद्देश्य को अंजाम देने के लिए निजी व्यक्तियों को लूटने की अपेक्षा सरकारी कोषों एवं खजाने को अपना निशाना बनाना निश्चित किया। 9 अगस्त 1925 को **यु० पी०** का काकोरी कांड इसी का परिणाम था। इसके नेता रामप्रसाद बिस्मिल इसी कारण प्रसन्नतापूर्वक फांसी पर लटक गए। इसी क्रांतिकारी संगठन के प्रमुख भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की केंद्रीय विधानसभा भवन में 8 अप्रैल 1929 को बम मारे और गिरफ्तारी भी हुए। किंतु सरकार ने संगठन के क्रांतिकारी नेता भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को साण्डर्स हत्या अथवा लाहौर षड्यंत्र केस में 23 मार्च 1931 को फांसी दे दी गई। [5]

एच० एस० आर० ए० क्रांतिकारी संगठन के समस्त क्रांतिकारियों की 1917 की वाल्सेविक क्रांति के स्वीकारियता थी। वह पूंजीवाद, साम्राज्यवाद के कट्टर विरोधी और समाजवाद को केवल 'पूर्ण स्वराज' का आधार मानते थे। उनका विश्वास था कि सशस्त्र क्रांति के बल पर और युवाओं के सहयोग से ही भारत में विदेशी प्रभुत्व को समाप्त किया जा सकता है। उनका विश्वास था कि पूंजीवादी गरीबों को मारने वाला और पतन करने वाला होता है।[6]

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:07 in July-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

हालांकि राष्ट्रीय कांग्रेस एवं स्वयं गांधी जी देशभक्ति की अपेक्षा प्रतिक्रिया के कट्टर विरोधी थे किंतु फिर भी वह सभी देशभक्तों के सामने नतमस्तक थे क्रांतिवीर भगत सिंह की विषय में गांधी जी ने कहा था कि '**हमारे मस्तक भगत सिंह की देशभक्ति साहस, भारतीय जनता के लिए बलिदान तथा प्रेम के लिए आगे झुक जाते हैं**' यही नहीं बल्कि एच० एस० आर० ए० नामक क्रांतिकारी संगठन और नेताओं के द्वारा ही गांधीवादियो का प्रमुख नारा '**क्रांति अमर रहे**' को भी अपनाया। सारांश: भारत की आजादी में उपर्युक्त क्रांतिकारी संगठन एवं उनके नेताओं का योगदान अविश्मरणीय रहेगा। [7]

कार्यक्रम: एच० एस० आर० ए० संगठन के क्रांतिकारियों का आंदोलन का स्वरूप कुछ अलग ही था। इनका गांधीवादी विचारधारा, शांतिपूर्ण प्रतिरोध एवं असहयोग आंदोलनो के तरीकों को आजादी के लिए पर्याप्त नहीं मानते थे। उन्होंने पहली बार कांग्रेस का विकल्प देखकर एक नए समाज का कार्यक्रम दिया जो समाजवाद पर आधारित था। सर्वप्रथम 8 दिसंबर 1928 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में सभी क्रांतिकारी पार्टियों ने समाजवाद को अपना उद्देश्य घोषित किया और हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का नाम बदलकर 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन कर दिया। इन्होंने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यकर्ताओं को बम बनाने की शिक्षा, पैसा इकट्ठा करने के लिए तथा सशस्त्र क्रांति लाने के लिए सरकारी खजाने विशेषकर बैंक और डाकखानों पर धावा बोलने का निश्चय किया । प्रथम चरण के क्रांतिकारियों से इनका कार्यक्रम पूर्णतया भिन्न था। पुलिस के मुखबिरों, छोटे कर्मचारियों और सरकारी अफसर पर हमले के पक्ष में न थे, इनके विचार में ऐसे कार्य एवं गतिविधियां देश की क्रांति के मार्ग में बाधा बन सकती हैं साथ ही 'इन क्रांतिकारियों के कार्यक्रम में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन फौज बनाकर गांव और शहर के युवकों को भर्ती करके उन्हें सैनिक शिक्षा देना था | इस सभा के नेता और कार्यकर्ता मध्य और निचले मध्यम वर्ग से थे इसलिए उन्होंने संघर्ष के लिए जनता संगठित करने की अपेक्षा अपने वीरता पूर्वक कार्य और संघर्षों से लोगों तक अपना संदेश पहुंचाने का निश्चय किया। सिद्धांत: ये लोग आतंकवाद के विरुद्ध थे किंतु क्रांति के लिए आतंकवाद को आवश्यक मानते थे। संगठन के घोषणा पत्र में भी लिखा था आतंकवाद पूर्ण क्रांति नहीं है और क्रांति आतंकवाद के बिना पूर्ण नहीं होती।[8]

आदर्श: इन सब के अतिरिक्त एच० एस० आर० ए० के सभी नेता और कार्यकर्ता अहिंसात्मक संघर्ष की रणनीति एवं विचारधारा से पूर्णत: असंतुष्ट थे। वे चीन, तुर्की, आयरलैंड, मिश्र, रूस आदि में होने वाले सशस्त्र विद्रोह

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:07 in July-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

एवं क्रांतियो से अनुप्रेरित होकर अपने देश में भी ब्रिटिश शासन को उखाड़ना चाहते थे। इसीलिए देश के विभिन्न भागों संयुक्त प्रांत, पंजाब, दिल्ली तथा बंगाल आदि में संगठन भी स्थापित किया' इस संगठन का मुख्य उद्देश्य भारत में समाजवादी गणतंत्रवादी राज्य की स्थापना और लोकतांत्रिक प्रक्रिया से संगठन में कार्य करना था' इसमें सभी नेता एवं कार्यकर्ता बहुमत के निर्णय को मानने पर बाध्य थे। इस संगठन के मुख्य आदर्श अहिंसात्मक नीतियों की निरर्थकता के प्रति जागृति, पूर्ण स्वतंत्रता के लिए प्रत्यक्ष कार्यवाही और पूंजीवाद साम्राज्यवाद के स्थान पर भारत में संघीय गणतंत्र की स्थापना आदि थे। संगठन का प्रथम क्रांतिकारी कार्य लाहौर के सहायक पुलिस अध्यक्ष की लाहौर रेलवे स्टेशन पर भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और राजगुरु द्वारा 17 दिसंबर 1928 को हत्या करना था। संगठन का अगला महत्वपूर्ण कार्य दिल्ली की केंद्रीय असेंबली में जब सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक और व्यापार विवाद विधेयक पर बहस चल रही थी तो 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त द्वारा दो बम और कुछ पर्चे फेके गए इन पर्चो में लिखा था **'बेहरो को सुनने के लिए बम की आवश्यकता है'** इसी सब के परिणामस्वरुप भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव पर लाहौर षड्यंत्र मुकदमा चलाकर 23 मार्च 1931 को फांसी दे दी गई। फांसी के तख्ते पर भी ये क्रांतिकारी गा रहे थे-

" दिल से न निकलेगी मरकर भी वतन की उल्फत,
मेरी तो मिट्टी से भी खुशबू-ए- वतन आएगी।

'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' के उद्देश्य पूर्व की अपेक्षा अब बदल चुके थे। अब उनके कार्यकर्ता एवं नेता जनक्रांति में विश्वास करते थे। **'पब्लिक सेफ्टी बिल'** के विरोध में एक मामूली बम के साथ फेके पर्चे से पता लगता है कि इनका उद्देश्य अदालत में गिरफ्तारी देना और जनता के बीच उनके विचारों और राजनीतिक दर्शन का प्रचार करना था। जो भी हो ये युवा अपने सिद्धांतों के प्रतिबद्ध, दुस्साहसी एवं निडर थे।[9]

ये युवा क्रांतिकारी रोज **'इंकलाब जिंदाबाद'** नारे के साथ अदालत में प्रवेश करते और **'सर्वहारा जिंदाबाद' साम्राज्यवाद मुर्दाबाद** के नारे लगाते रहते। इन युवा बलिदानों के गति और नारो ने संपूर्ण देश एवं युवाओं को झकझोर कर रख दिया और तो और अब तो गांधीवादी अहिंसा आंदोलन में विश्वास रखने वाले भी इनके प्रति सहानुभूति रखने लगे थे। हालांकि सिद्धांत: यह क्रांतिकारी युवा आतंकवाद के विरुद्ध रहे मगर क्रांति के लिए आतंकवाद को आवश्यक मानते थे। उनके स्वयं के घोषणा पत्र में भी लिखा था कि "आतंकवाद पूर्ण क्रांति नहीं और क्रांति पूर्ण आतंकवाद के बिना पूर्ण नहीं"[10]

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:07 in July-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

यद्यपि कांग्रेस और गांधी जी इस विचारधारा के विरोधी रहे फिर भी गांधी जी ने भगत सिंह की सहारना करते हुए कहा कि "हमारे मस्तक भगत सिंह के साहस, देशभक्ति तथा जनता के प्रति प्रेम और बलिदान के सामने झुक जाते हैं " यही नहीं इन युवा क्रांतिकारियों ने ही गांधीवादियों को नारा 'क्रांति अमर रहे' को लोकप्रिय बनाया। सारांश: भारत की आजादी में प्रयुक्त क्रांतिकारी संगठन एवं उनके नेताओं का योगदान अविश्मरणीय रहेगा।[11]

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मधुरिमा (अप्रैल 2015) **क्रांतिकारी भगत सिंह का राष्ट्रवादी आंदोलन में योगदान एक 'ऐतिहासिक अध्ययन'** जनरल आफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी सन एंड इन्नोवेटिव रिसर्च वॉल्यूम ऑनलाइन |
2. वही
3. जागरण जोश, (7 नवम्बर 2019) नई दिल्ली |
4. ग्रोवर, बी० एल० एण्ड यशपाल (2003**) आधुनिक भारत का इतिहास: एक नवीन मूल्यांकन**, एस चाँद एंड कंपनी, नई दिल्ली |
5. वही
6. चतुर्वेदी नीलम (मई-अगस्त 2024) **"ए ब्रीफ स्टडी ऑन हिंदुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन"** जनरल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज एंड रिसर्च ऑनलाइन |
7. ग्रोवर, बी० एल० एण्ड यशपाल (2003), वही।
8. चंद्र, विपिन (2014) **'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष'** हिंदी माध्यम कार्यालय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
9. शुक्ल, आर० एल० (2012) **'आधुनिक भारत का इतिहास**, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविघालय।
10. पाण्डे, ए० के० (2018) **"आधुनिक भारत"** प्रयाग अकेडमी, पब्लिकेशन एंड हिस्ट्रीब्युटर्स, इलाहाबाद|
11. ग्रोवर, बी० एल० (2003), वही।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:07 in July-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/